International Research Journal of Humanities, Language and Literature
Volume 5, Issue 2, February 2018 Impact Factor 6.401
ISSN: (2394-1642)
© Associated Asia Research Foundation (AARF) Publication
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

राष्ट्रभक्त क्रांतिकारी बारहठ परिवार

–डॉ. श्रीमती प्रकाश अमरावत
विभागाध्यक्ष–राजस्थानी विभाग
राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर

जिण मारग बारहठ बुआ, बहता सह देसोत।
माळा माथै मुलक रै, जगती जस री जोत।।
मरस्यां पण हरस्यां नहीं, बारहठ रा में बोल। (सवाईसिंह धमोरा)

बारहठ केसरीसिंह का जन्म संवत् 21 नवम्बर 1972 को शाहपुरा के समीप अपनी पैतृक जागीर के गांव 'देवपुरा' में हुआ। आपके पिता कृष्णसिंह सौदा बारहठ एक कुशल राजनीतिज्ञ और राजस्थान के प्रमुख नरेशों के परामर्शदाता के रूप में ख्याति प्राप्त थे। आप (कृष्णसिह बारहठ) के तीनों पुत्रों में केसरीसिंह बारहठ, किशोरसिंह बारहठ जो 'ब्राहस्पत्य' के नाम से प्रसिद्ध हैं। तत्कालीन पटियाला रियासत के स्टेट हिस्टोरियन थे। तीसरे पुत्र क्रांतिकारी जोरावरसिंह बारहठ थे। बारहठ परिवार दो देशप्रेम, स्वाभिमान, शौर्य और विद्वता विरासत में मिली थी। केसरीसिंह बारहठ अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। संस्कृत साहित्य और राजनीति का प्रकांड पंडित होने के उच्च कोटि के साथ डिंगल के महान कवि थे। मराठी, गुजराती और बंगला के उच्च कोटि के विद्वान थे। कवि केसरीसिंह बारहठ अपनी पिता कृष्णसिंहजी के जोधपर महाराजा की सेवा में चले जाने के पश्चात् उदयपुर महाराणा उन्हें कोटा नरेश की सेवा में नियुक्ति दे दी गई और आपको कोटा आना पड़ा। केसरीसिंह का बंगाल और महाराष्ट्र के क्रांतिकारियों से घनिष्ठ संबंध थे। राजस्थान में क्रांतिकारी संगठन के वे मुख्य स्तम्भ थे। क्रांतिकारी आंदोलन के जन्मदाता ही थे। उन्हीं की प्रेरणा और प्रयासों के फलस्वरूप यहां 'अभिनव भारत' क्रांतिकारी संगठन की शाखा स्थापित हुई। आपने राजपूत राजाओं और जागीरदारों को क्रांतिकारी संगठन से जोड़ने के लिए ''वीर भारत सभा'' की स्थापना की। राजस्थान के कई नरेश उसके सदस्य थे तो कई उसके प्रति अपनी निष्ठा रखते थे। बारहठजी भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन के प्रेरणा स्रोत श्री अरविन्द आदि से प्रेरित थे। वे युवाओं को इस यज्ञ में आहुति देने हेतु दीक्षित करना चाहते थे। इसी उद्देश्य में उन्होंने राजस्थान में कई छात्रावास बनाए, जिसमें युवाओं को भर्ती कर आत्म समर्पण योग की शिक्षा दी जाने लगी थी। ये क्रांतिकारी दल के अग्रीम सिपाही इसी उद्देश्य से विद्यालयों का संचालन करते, सेनाओं में क्रांतिकारी भावना को प्रसारित कर सशस्त्र क्रांति के समय उनका सहयोग प्राप्त करने की योजना बना रहे थे। केसरीसिंह प्रसिद्ध चारण परिवार से होने के कारण राजपूत राजाओं से उनके अच्छे सम्बन्ध थे। आपने राजपूत सेनाओं से सहज ही सम्पर्क स्थापित कर लिया और कई राजाओं को आजादी के इस संघर्ष में साथ देने के लिए राजी भी कर लिया था।

अर्जुनलाल सेठो, रासबिहारी बोस उनके घनिष्ठ मित्रों में थे, जो सशस्त्र क्रांति की तैयारियां कर रहे थे। 'ठाकुर केसरीसिंह बारहठ उसके प्रमुख घटक थे। राजस्थान में क्रांति संचालन का दायित्व बारहठजी पर था।

जैसा जांभोजी की वाणी में कहा गया है कि ''पहिले किरिया आप कमाइये पीछे ओरां ने फरमाइये'' ठीक बारहठजी ने अपने पुत्र कुंवर प्रतापसिंह और दामाद ईश्वरदान आसिया को क्रांतिकारी कार्यों का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने व शिक्षा हेतु मास्टर अमीरचन्द के पास भेज दिया, जो रासबिहारी के दाहिने हाथ और क्रांतिकारी थे। यह जानते हुए भी कि क्रांतिकारी संगठन में काम करने का अर्थ है निश्चित प्राण दंड अथवा निर्वासन। उन्होंने अपने आपको ही नहीं पुत्र, दामाद व भाई जोरावरसिंह को भी मातृभूमि की स्वतंत्रता के हवन में आहूति दे दी। भारत के इतिहास में यह पहला ही सपूत होगा, जिसने अपने पूरे परिवार को आजादी की बलिवेदी पर चढ़ा दिया। नन्दकिशोर सांदू 'नवाब' ने सरजमीने शाहपुरा के नाम से शायराना अंदाज में क्या खूब लिखा है–

जब–जब भी पिघली है बारूद यहां
जब–जब भी कांपा है अमन का जहां
जब–जब भी वतन पे आंच आई
जब–जब भी कश्ती–ए–अमन डगमगाई
'शाहपुरा' की जमीं ने लाल उगले है
जोरावर–ओ–परताप–ओ–केसरीसिंह जैसे।

ब्रिटिश सरकार को केसरीसिंह के क्रांतिकारी कार्यों के संबंध में संदेह तो था, परन्तु उनके पास बारठजी के विरूद्ध ठोस प्रमाण नहीं था। बिहार के निजाम के घनी महन्त की हत्या के संबंध में अर्जुनलाल सेठी के विद्यालय की तलाशी में सांकेतिक भाषा में लिखे एक पत्र के मिलने से और वीर भारत सभा के सदस्यों की सूची मिली। उसके आधार पर दो वर्ष पुरानी जोधपुर की घटना जिसमें प्यारेलाल साधु की रहस्यपूर्ण गुमशुदगी को फिर से हवा मिल गई। इन सब में दोषी करार देकर केसरीसिंहजी को गिरफ्तार किया गया। उनकी पारिवारिक जागीर तथा हवेली जब्त कर ली गई और चल सम्पत्ति लूट ली गई। उन पर प्यारेलाल साधु की हत्या का अभियोग चलाया गया और प्रमाण न मिलने के उपरान्त भी 20 वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड दे दिया गया। उन्हें बिहार के हजारीबाग जेल की 'काल कोठरी' में रखा गया। सत्य की सब जगह जीत होती है। हजारी बाग जेल के सुपरिंटेंडेंट कर्नल मीक और उनकी पत्नी श्रीमती मीक घटनावश केसरीसिंह बारठ के तेजस्वी व्यक्तित्व, पांडित्य, देशभक्ति के उद्धांत विचारों से बड़े प्रभावित हुए, वे उनके प्रशंसक ही नहीं मानो भक्त बन गए थे। उनकी सिफारिश पर बारठजी को पांच वर्ष के पश्चात् मुक्त कर दिया गया। जेल में रहते हुए जो उन्होंने अपनी पुत्री को पत्र लिखा था, उसका प्रत्येक शब्द बारठजी की गहन देशभक्ति का परिचायक है। पत्र का कुछ अंश यहां देना चाहूंगी–

श्रीमती सौभाग्यवती चिरंजीवि बाई चन्द्रमणि,

प्रसन्न रहो

तुम्हारा पत्र मिला, पढकर परम संतोष हुआ। मेरे संबंध में तुम लोग चिन्ताकाल न बिताकर स्वकर्तव्य धर्म परही मनन करो। भारत में जन्म लेने के साथ ही जो कर्तव्य मानव जीवन के साथ अविच्छिन्न प्राप्त होते हैं, जो ऋण देश की प्रत्येक संतान पर चाहे पुरुष हो चाहे स्त्री, सब पर रहता है। उसी कर्तव्य को पूर्ण करने, उसी ऋण से मुक्त होने में ही हमारा कलयाण है। तुम अवश्य यह जानकर संतुष्ट होओगी कि भारत के एक महत्वूर्ण प्रदेश में जागृति होने का प्रारंभ अपने कुटुम्ब की महान आहूति से ही हुआ है। इस

राजसूत्र यज्ञ में हम लोगों की बलि मंगलरूप हुई है। ब्रिटिश सत्ता का विरोध बारठ परिवार झेल रहा था, पर उनके कदम कभी पीछे नहीं हटे। लक्ष्मणदान कविया खैण रचित 'केसर की कीरती'' में कवि ने कवि केसरीसिंह के अदम्य साहस और देशप्रेम के अंग्रेजों के पांव कैसे उखड़ने लगे। उसका अनेक छंदों में वर्णन किया है। एक उदाहरण यहां देना चाहूंगी–

जोधपणां रो जोर द्रग केसरी दरसायो।
दसा देस री देख, अथक अन्तर अकुळायो।
फिरंगियां रा फैर, जिकां नहं ओरूं झेलां।
बाणी करां बुलन्द, ब्रथां नहं पापड़ बेलां।
उठायो साद केसर इतो, बितो देश में व्यापियो।
कोपियो ई सूं फिरंग कस, रंग वीर पग रोपियो।।
संदेश पूगो घर–घर सरब, सुत केसर रो सज्जियो।
खिलाफ फिरंगियां इत लड़ण, बाज लड़ण हित बज्जियो।

राजस्थानी कहावत है कि ''रूखां जेड़ा छोड़ा व्है'' कुंवर प्रतापसिंह भी उसी मिट्टी का बना था। राजस्थान में भावी सशस्त्र क्रांति के संगठन का कार्य कर रहे थे। घूम–घम कर सम्पर्क बनाते हुए राजस्थान के वरिष्ठ राष्ट्रकर्मी श्री रामनारायण चौयधरी जो प्रताप के सहपाठी और उस यात्रा में उनके साथ थे। उनके लिखे अनुसार जोधपुर के पास असारानाडा (आशानाडा) रेल्वे स्टेशन पर प्रताप को रेल्वे स्टेशन मास्टर द्वारा किए गए विश्वासघात के कारण गिरफ्तार कर दिया गया। उन पर बनारस षड़यंत्र का अभियोग चला जेल यातनाओं के साथ कई प्रलोभन दिए गए। प्रताप दृढ़ संकल्पी थे। उन्होंने क्रांति दल के रहस्यों को बताने से साफ इंकार कर दिया। प्रताप को जब उनकी माता माणक बाई के रात–दिन रोने आर बीमार होकर प्राण त्यागने की बात कही गई तो प्रताप का उत्तर जो जग–जाहिर है कि ''तुम कहते हो कि मेरी मां मेरे बिना रात–दिन रोती है। अपनी मां को हंसाने के लिए मैं हजारों माताओं को रूलाना नहीं चाहता। यदि मैं अपने साथी क्रांतिकारियों की माताओं को रूलाने का कारण बना तो वह मेरी मृत्यु होगी और मेरी मां के लिए घोर कलंक होगा। भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के निदेशक सर चार्ल्स क्लीवलैंड वीर प्रतापसिंह के विषय में लिखते हैं कि ''मैंने आज तक प्रतापसिंह जैसा वीर विलक्षण बुद्धि वाला युवक नहीं देखा। उसे सतान में हमने कोई कसर नहीं रखी। परन्तु वाह रे धीर वीर! वह टस से मस नहीं हुआ। गजब का कष्ट सहने वाला था। हमारी सब युक्तियां बेकार हुई। हम सब हार गए, उसी की बात अटल रहीं। वह विजयी हुआ।'' बरेली जेल में अमानुषिक यातनाएं देने से वहीं प्रतापसिंह 7 मई 1918 को उस भारत माता के सपूत ने आखिरी सांस ली। ऐसे वीर सपूतों के आत्म बलिदान से ही भारत को आजादी मिली। स्वत्र मनुज देपावत जो स्वयं विप्लवी कवि के रूप में जाने जाते हैं। प्रताप की बलिदान कहानी में उस सपूत के शौर्य, त्याग और साहस का ओजपूर्ण वर्णन किया है। 20 वर्ष का युवा स्वतंत्रता के लिए शहीद हुआ।

वह कैदी था पर झुका नहीं, था अडिग रहा देशाभिमान।
वह बन्दी था पर झुका नहीं, क्या हुई भावनाएं गुलाम।।
खो गया देश का वह वैभव, माता ने खोया था सपूत।
था मरा नहीं वह अमर हुआ, चिर स्मरणीय वह क्रांतिदूत।।

केसरीसिंह के छोटे भाई जोरावरसिंह भी स्वातंत्र्य प्रेमी थे। 1912 में वायसराय लार्ड हार्डिंग पर बम फैंकने का काम उन्होंने ही किया था। पहले यह काम प्रताप को सौंपा गया था, पर कद में छोटे होने के कारण निशाना चुकने के भय से क्रांतिकारी दल ने जोरावरसिंह को उपयुक्त समझकर यह साहसिक कार्य करने की जिम्मेदारी सौंपी। कुछ

गोटे किनारी के पकड़े खरीद कर उनमें बम छिपाये। दिल्ली पहुंचने के लिए नाव द्वारा यमुना पार करके जाना था। जोरावरसिंह पोटली गोद में लिए बैठे थे। किसी ने सामान नीचे रख दो। तब बोले–''भाई हम माहेरा भरने जा रहे हैं। कपड़े खराब होने के डर से गोद में लिए बैठे हैं।'' वे चांदनी चौक की एक इमारत की गैलरी में जहां सब महिलाएं बैठी थी, बुरका ओढ़कर बैठ गए। उनके साथी और प्रतापसिंह सीढ़ियों के नीचे खड़े थे। जैसे ही वायसराय हाथी पर बैठकर निकलने लगा। जोरावरसिंह ने बम फैंका। एक महिला के हाथ से धक्का लगने के कारण निशाना चूक गए। वायसराय घायल हुआ पर बच गया। उसका छत्र पकड़े जमादार जो पीछे चल रहा था, मारा गया। यह घटना अंग्रेजों के हौंसले पस्त करने के लिए काफी थी। उस घटना के बाद जोरावरसिंह आजीवन फरार रह। अंग्रेज सरकार ने उनको पकड़ने के लिए पुरस्कार की घोषणा की, लाख कोशिशों के बाद भी वे पकड़े नहीं गए। क्रांतिकारियों को जब धन की आवश्यकता थी तो जोरावरसिंह ने जनता की सौंपी धरोहर के रूप में महंतों और मठाधीशों को लूट कर धन प्राप्त किया। इसमें आरा नीमेज महंत को प्राणों से हाथ चातुर्य और धीरज से अपने आपको बचाते रहे। खुफिया पुलिस उन्हें पकड़ न सकी। फरारी अवस्था में उनका अधिकतर समय मालवा के सीतामऊ राज्य औश्र सीमावर्ती बीहड़ जंगलों में बीता।

जोरावरसिंळ और सीतामऊ के महाराजा में मित्रता थी। बचपन में वे साथ रह चुके थे। जब ब्रिटिश सरकार को पता चला कि जोरावरसिंह सीतामऊ में हैं तो महाराजा पर दबाव पड़ने पर उन्होंने जोरावर को अन्यत्र चले जाने के लिए कहा। जोरावरसिंह ने महाराज को संदेशवाहक के साथ एक रहीम का दोहा लिख कर भेजा, जिसका भाव था–''सरोवर सूखने के बाद पक्षी पड़ जाते हैं, पर बिना पंखों वाले जीव कहां जाऐं?'' विद्वान और गुणग्राहक महाराजा ने भावपूर्ण अभिव्यक्ति के पश्चात् कभी कुछ नहीं कहलवाया। वे नाम बदलकर मालवा के गांवों में इधर–उधर रहने लगे। रहीम का दोहा–

सर सूखे पंछी उड़े, औरहि सर ठहराय।
मच्छ, कच्छ बिन पच्छ के, कह रहीम कित जाय।।

ऐसे बारठ त्रिमूर्ति के लिए कवियों ने अपने भाव रखे हैं। यशकरण खिड़िया जैतपुरा के ये दोहे–

केसरि और प्रताप अरू, जोरावर वर वीर।
कीन निछावर देस हित, संयुत विभव शरीर।।
साहस शौर्य सुत्याग युत, भारत भक्त प्रवीन।
उनके सुयश शरीर की, ये प्रतिमाएं तीन।।

शाहपुरा में इन तीनों विभूतियों की मूर्तियां ''त्रिमूर्ति स्मारक'' के नाम से जानी जाती है। शाहपुरा स्थित उनकी हवेली को सरकार ने अधिग्रहित कर राष्ट्रीय स्मारक स्थल बनाया गया है।

ठाकुर केसरीसिंह बारठ राज्याश्रम में पले थे, पर अपने आश्रयदाता की अनुचित बातों का कभी समर्थन नहीं किया। ''चेतावनी रा चूंगट्या'' इसका पुख्ता प्रमाण है। 1903 में महारा फतेसिंह का ह्रदय परिवर्तन करने में आप सफल हुए।

उन 13 सोरठों ने मेवाड़ का इतिहास फिर से अखण्ड बना दिया था। घर–घर में एकलिंगजी के जयकारे गूंज उठे। सब जगह यही चर्चा थी कि ''जिसने न देखा पता वह देखेगा फता'' प्रताप की उसी शान को पुनः याद किया गया। कवियों और पत्रकारों की निश्चेष्ट कलमें तड़पने लगी। बूढ़े भारत में फिर से जवानी आ गई थी। एक सोरठा देना उचित समझूंगी–

घण घलिया घमसाण, राण सदा रहिया निडर।
पेाख्न्ता फुरमाण हलचल किम फतमल हुवै।।

रदेखे अजस दीह, मुळकेलो मन ही मनां।
दम्भी गढ़ दिल्लीह शीश नमता शीशवद।।

एक एक सोरठे में प्राण भरने की ताकत है। इन पर तो पृथक आलेख लिखा जा सकता है।

राजाओं को चेतावनी देन का साहस और तेजस्विता इस क्रांतिकारी युगचेता में थी। युवा ही भावी कर्णधार देश की रक्षा का दायित्व निर्वाह करेंगे। इसीलिए उन्होंने कहा–

''नवयुवक समाज स्थापन करिये, चिकने और ओंधे पड़े हुए घड़ों पर असर न होगा। वह समाज उत्थान में अधिक आशान्वित होता है, जिसमें सफेद बालों में नवीन ज्योति चमकती है। बूढ़ों का अनुभव और युवाओं की शक्ति मिलकर एक हो जाए तो कोई भी सफलता से इंकार नहीं किया जा सकता।

आपने रूढ़ियों से ऊपर उठकर जीवन को व्यावहारिक बनाया। आपने वर्ण व्यवस्था से ऊपर उठने की बात कही। ''अब तो वास्वत में संसार के आधार स्तम्भ सच्चे अन्नदाता कृषिकार ही सर्वोपरित्व है, किसान संस्था अमर है और रहेगी। हल का बाना सामान्य नहीं।'' सत्य बोलने के लिए मितभाषी बनना जरूरी है। ऐसे बारठ जी के विचार थे। आपके विचार बीज मंत्रों का काम करते थे। ''ईश्वर के घर से कभी किसी व्यक्ति या जाति को राज्य करने का परवान नहीं मिलता अर्थात् समय और सत्ता परिवर्तनशील है–

जो आसी उणरी हुसी, आसी विण नूंतीह।
आ नीं किणरे बाप री, भगति रजपूती।।

ये चेतना के सुर थे जो पृथक पृथक रूप से सामने आए। बारठजी कर्ममय जीवन के पक्षधर थे। ''पराये परीभ्रम पर नींद लेने के दिन लद गए।'' का भाव है कि जो करना स्वयं को कर्मठ बनकर करना है। अर्थात् इसमें भी कर्तव्य पथ पर चलने की सीख है। शिक्षा प्रणाली को लेकर आपके विचार आज भी प्रासंगिक है।''शिक्षा का मूल सिद्धांत लोगों को केवल सेवा वृति के योग्य बनाने का नहीं किन्तु देशभक्ति, सच्ची और स्वतन्त्र उद्योगी प्रजा के बनाने का होना चाहिए।

जेल से मुक्त होते ही केसरीसिंह जी ने सन् 1920 में अखिल भारतीय चारण सम्मेलन आहृत किया, जिसके सभापति सीतामऊ के राइौड़ नरेश महाराजा रामसिंहजी थे। अपने स्वागत भाषण में केसरीसिंहजी ने राठौड़ों के योगदान का यह दोहा कहा–

करी दौड़ हित कवियांण (कवियाणां) ठौड़ ठौड़ राठौड़।
होड़ बियां वह नहं हुवै, करियां जतन करौड़।।

साथ चारण जाति को निरंकुश क्षत्रियों पर अंकुश का काम करने हेतु प्रेरित किया। उन्हें विद्यायसनी बनाने को जागृत किया। चारणों संबंधी दोहे बडत्रे मार्मिक हैं–

रहता क्षत्रिय रात दिन, मद बहता मातंग।
चहता हत्थिप चारणा, जद ठह ठहता जंग।
विपथ बहुहां बाहुता, पलटाता कर प्यार।
बिड़दायां मन बाढ़ता, देस काळ निरधार।।
चारण गुण रा चाहणं, बिरळ बाहुज आज।
बिन विद्या चारण बिरथ, सूनो वीर समाज।।

आज जो काम संचार साधनों (समाचार पत्रों, पत्रकारों) का है वो काम मध्यकाल में चारणों द्वारा किया जाता रहा है। उद्‌बोधन बिड़दाव और धिक्कार तीनों कार्य अवसर अनुसार वे खुले मन से करते।

केसरीसिंहजी का आत्मबल सशक्त था। युग धर्म के अनुसार खुद को संभाल लेते, फिर भी ईश्वर के प्रति उनके भाव पूर्ण समर्पित थे। एक कवित्त जिसमें निष्काम भाव से आपका व्यक्तित्व ईश्वर के प्रति आश्रित भाव द्रष्टव्य है।–

गौरव कितेक गहै, धान्य धन सम्पति को ,
गुनन कितेक निज विधाबळ (बळ) भारी को।
केते ही बलिस्ट इष्ट देह ही तें नेह बांधे
सतत् अराधे केते, सतति सुखारी को
यौवन के छाकै बांकै निपट अदा के छैल
केते बनि अच्छरा सी चाहत सुनारी को
मैं तो हूं निकाम नाम, मात्र नर देह धारी
आसरो गहयो है अब, स्याम गिरधारी को।।

अर्थात् धन, सम्पति, विद्या, यौवन सभी नश्वर है क्षण भंगूर देह औश्र भौतिक सुखों का क्या अभिमान करना केवल भगवान ही मेरे आघ्रय हैं।

जयनारायण व्यास लिखते हैं कि बारठजी के कवित्व या शब्दों के माध्यम से आग सुलगती थी। देशभक्ति और राष्ट्र भावना की यह आजादी रूपी आग उन्हें प्रेरणा देती, उनकी कविता ''एकागी'' थी। वे सौन्दर्य वर्णन करते तो भी उसमें शौर्य अनायास ही आ जाता था। यह कविता देश के उद्धार का साधन बन जाती। उनकी 'पणिहारी'' यौवन की अठखेलियों के लिए नहीं रची जा सकती, बल्कि गुलामी के बंधन तोड़ने को पैदा हुई है। कविता का एक–एक कण देश को, वीर बनाने के लिए आगे उछलता है। उनका प्रत्येक स्वर गुलामी को दूर करने का प्रेरणा गीत है। बारठजी के विषय में कहां तक लिखा जाए, आपके ये बोल ''मैं हजार भयों से भी निश्चित हूं, क्योंकि सत्य नास्ति भयं स्वचित्'' अंत में उस क्रांतिकारी परिवार को जिसमें सिंध पुरुषों लोह पुरुषों का जन्म हुआ और वीर पत्नी वीर माता रूपा माणककंवर ने जिस प्रताप को जन्म दिया, वो मेवाड़ी राणा प्रताप के कर्मवीर, राष्ट्रभक्त नहीं था। जीवन की मात्रा कष्टपूर्ण थीं, पर कर्तव्य पथ उज्ज्वल था। पराधीनता उस सिंध को मंजूर नहीं थी। बारठ रूपसिंह के डिंगल गीत के भाव मार्मिक हैं–

धरा धाम अर धनर गयो, गई सब सुख री घड़ियां।
सुत प्रताप सो छोड़, पड़ण लागी दुख झड़ियां।
माणिक सी मणि महल गई, दधि विपदा डारै।
कळ रो दीप किसारे गयो, वृद्ध बंधु विसारे।
सह भांत वेह प्रतिकू वहै, केहर रह्यौ दहाड़तौ।।

क्रांतिकारी परिवार को शत्–शत् नमन, मेरा सौभाग्य है कि मैं चारण कुलश्रेष्ठ को याद कर सकी, इसके लिए गजादानजी का आभार, जिन्होंने मुझे यह सुअवसर दिया। मुझे अपने जातीय गौरव पर नाज है। मैं अभिभूत हूं।

संदर्भ सूची

राजस्थान केसरी ठाकुर केसरीसिंह बारठ, सं. सवाईसिंह धमोरा
चारण चिंतन, सं. शुभकरण देवल
भाग–जनवरी–दिसम्बर, 2009
आजादी री अळख, सं. मूलदान देपावत, प्रकाश अमरावत